RJPP, Vol. 15, No. 3, 2017, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 4.0000 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43279

"भारतीय कृषि में अभिनव सुधारों से ही रुकेंगी किसानों की आत्महत्याएं"

डॉ. पूनम कुमारी

पीएच.डी. लोक प्रशासन, समाजविज्ञान संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

सारांश

कृषि प्रधान राष्ट्रभारत में कृषि क्षेत्र उत्पादन, बाज़ार और कीमतों से जुड़े विभिन्न प्रकार के जोखिमों के कारण आमदनी में व्याप्त अस्थिरता से ग्रस्त है।साथ ही भारत की विकास गाथा में, कृषि और उससे संबंधित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना अति आवश्यक है क्योंकि ये वो क्षेत्र हैं जो भारत की बढ़ती आबादी के लिए रोज़गार और सम्पोषणीय आजीविका मुहैया कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे। प्रस्तुत लेख में कृषि से जुड़े विभिन्न पहलुओं यथा, भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान, कृषि की वर्तमान स्थिति, भारतीय संदर्भ में विभिन्न कृशिगत समस्याओं विशेषकर किसान आत्महत्या का विष्लेशण करते हुए इनके समाधान के समुचित उपायों का वर्णन किया गया है। इसके लिए अभिनव कृषि की नवीन अवधारणा के विभिन्न आयामों को दर्शाया गया है।

मुख्य शब्द–कृषि, किसान आत्महत्या, कृषिगत समस्याएं, आजीविका सुरक्षा,अभिनव कृषि सुधार,उत्पादन

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ. पूनम कुमारी

भारतीय कृषि में अभिनव सुधारों से ही रुकेंगी किसानों की आत्महत्याएं,

RJPP 2017, Vol. 15, No. 3, pp. 113-120
Article No. 17 (RP558)

***Online available at** : http://anubooks.com/?page_id=2004*

प्रस्तावना–

भारत की बढ़ती आबादी के लिए रोज़गार और सम्पोषणीय आजीविका मुहैया कराने के लिए, कृषि और उससे संबंधित क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना अति आवश्यक है। लेकिन कृशि क्षेत्र अस्थिरता से ग्रस्त है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सैमुअल जॉनसन के अनुसार, "कृषि न सिर्फ राष्ट्र को समृद्ध बनाती है, बल्कि यही एकमात्र समृद्धि है जिसे राश्ट्र अपनी कह सकता है।" कृषि की महत्ता को सर आर्थर लुईस के ''द्वैत अर्थव्यवस्था'' के मॉडल में देखा जा सकता है। उनका कहना है कि, "किसी भी देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया में कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों के बीच मौजूद अन्तःसंबंध खोजे गए हैं। लुईस का मॉडल दर्शाता है कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया में हमेशा श्रम शक्ति कृषि क्षेत्र से हटकर अधिक लाभकारी औद्योगिक क्षेत्र की ओर जाती है और समय बीतने पर कृषि क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में अपने हिस्से के संदर्भ में अर्थव्यवस्था का कम महत्त्वपूर्ण हिस्सा ही रह जाता है।" द्वैत अर्थव्यवस्था वाला मॉडल भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए भी सटीक बैठता है परन्तु अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र के महत्त्व को कम नहीं आंकता। विकास कृषि की उत्पादकता में तीव्र वृद्ध के साथ–साथ होना चाहिए जो लोगों के लिए बढ़ती कृषि आय और पर्याप्त खाद्य आपूर्ति भी सुनिश्चित करे।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान–

भारत में खेती लाखों लोगों को आजीविका सुरक्षा प्रदान करने के साथ साथ यह देश में उपलब्ध करीब 52 प्रतिशत श्रमिकों को रोजगार प्रदान करती है। हालांकि यह बात भी सच है कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि की हिस्सेदारी महज 14 प्रतिषत है। राष्ट्रीय जीडीपी में कृषि का योगदान भले ही कम हो रहा हो, लेकिन आज भी इस महत्वपूर्ण क्षेत्र से देश की सवा एक अरब आबादी को जहां खाद्य सुरक्षा प्राप्त होती है, वहीं कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल मिलता है। कृषि के विकास का देश की ग्रामीण गरीबी पर सीधा और निर्णायक प्रभाव भी पड़ता है। कृषि के विकास को गति देना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि विश्व विकास रिपोर्ट, के अनुसार निर्धनता की दर में कमी लाने के लिए कृषि से परे जीडीपी विकास की तुलना में कृषि क्षेत्र की जीडीपी अर्थात् सकल घरेलू उत्पाद दोगुना प्रभावी होता है। केवल इसी अर्थ में ही, भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास को सही तौर पर समावेशी रूप देने के लिए कृशि क्षेत्र का प्रदर्षन पहले की अपेक्षा बेहतर रहना बहुत ही जरूरी है। समावेशी विकास के लिए किसी समुदाय, जाति अथवा वर्ग को विषेश रियायतें देने की तुलना में यह उपाय अधिक कारगर और बेहतर होगा। भारत में निर्धनता को यथाशीघ्र दूर करने के लिए तीव्र कृषि वृद्धि दर की आवश्यकता है और भारतीय कृशि में 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से वृद्धि की संभावना है। यदि बड़े नीतिगत निर्णय लिये जाने का साहस दिखाते हुए "अभिनव कृषि" को अपनाया जाए तो यह वृद्धि दर अगले दस वर्षों तक जारी रह सकती है। इस प्रकार देश से गरीबी, भूख और कुपोषण को दूर भगाने के साथ ही किसानों की आत्महत्याओं को रोकने में कृषि क्षेत्र अपना महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

कृषि की वर्तमान स्थिति–

किसानों, वैज्ञानिकों एवं नीति निर्माताओं के संगठित प्रयासों से भारतीय कृषि ने नवीन ऊंचाइयों को छुआ है। साठ के दषक के मध्य में नयी कृशि तकनीक के इस्तेमाल के बाद गत 50 वर्षों के दौरान कृषि के उत्पादन में व्यापक वृद्धि हुई है। भारत वर्तमान में 25 करोड़ 20 लाख टन अनाज, दो करोड़ 60 लाख टन तिलहन, एक करोड़ 70 लाख टन दलहन, 25 करोड़ 70 लाख टन फल एवं सब्जियां और 14 करोड़ 60 लाख टन दूध उत्पादित करता है। कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि के लिए राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि अपनी जरूरतों के लिए

दलहन और तिलहन के उत्पादन में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी का लक्ष्य हासिल करने के बावजूद उत्पादकता, अधिक लाभ की स्थिति लंबे समय तक बनाये रखने और जलवायु परिवर्तन के लिए माहौल बनाने की दृष्टि से भारतीय कृषि अब नयी चुनौतियों से गुजर रही है। उत्पादकता की दृष्टि से सतत विकास के लिए किसानों को प्रौद्योगिकी का सहारा देते रहना जरूरी है। खराब होने वाले उत्पादों का उत्पादन कम होना विपणन सुविधाओं और वायदा खरीद के बीच कमजोर कड़ी का संकेतक है, जबकि जलवायु परिवर्तन इस बात की ओर इषारा करता है कि खाद्य सुरक्षा का लक्ष्य हासिल करने के लिए जल और जमीन जैसे संसाधनों का उचित प्रबंधन होना चाहिए। इन समस्याओं के दीर्घकालिक समाधान और बढ़ती चुनौतियों पर पार पाने के लिए प्रौद्योगिकी एवं नीतिगत परिवर्तन करते हुए अभिनव कृषि को कार्यरूप में परिवर्तित करना जरूरी है। आर्थिक व सामाजिक कल्याण हेतु इन सतत लाभों को बनाए रखना भी आवश्यक है।

किसानों की आत्महत्याएं एक कृषिगत समस्या–

भारत ने साठ के दषक के मध्य की हरित क्रांति के युग के बाद से खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाने में उल्लेखनीय प्रगति की है। फिर भी, कुल कारक उत्पादकता में गिरावट, प्राकृतिक संसाधनों में अंधाधुंध दोहन और रुकी हुई कृशि आय प्रमुख चिंता बन गए हैं। कृशि पर व्यापार उदारीकरण का प्रभाव और विश्व स्तर पर जलवायु परिवर्तन नई चुनौतियां हैं। ऐसे समय में किसानों की आत्महत्याओं ने सारे देष को झकझोर दिया है। आधिकारिक आकलन के अनुसार साल 2009 में कुल 17,638 किसानों ने आत्महत्या की यानी हर 30 मिनट पर एक किसान–आत्महत्या। यह आंकड़ा सच्चाई से थोड़ा दूर हो सकता है। अक्सर महिलाओं की गणना किसान–आत्महत्या के आंकड़ों में नहीं की जाती क्योंकि उनके नाम से जमीन की मल्कियत नहीं होती जबकि जमीन की मिल्कियत का होना किसान कहलाने के लिए सरकारी नीतियों और आंकड़ों में जरुरी है। खुद भारत सरकार के अद्यतन आंकड़ों (नेशनल क्राईम रिकार्ड ब्यूरो द्वारा जारी) में माना गया है कि साल 2009 में देश में प्रतिदिन 348 लोगों ने आत्महत्या की इसमें किसान–आत्महत्याओं की संख्या प्रतिदिन 48 रही। साल 2004 के बाद से प्रतिदिन औसतन 47 किसानों ने आत्महत्या की है यानी हर 30 मिनट पर एक किसान आत्महत्या। वर्तमान में भारतीय कृषि को एक साथ अभूतपूर्व चुनौतियों और अद्वितीय अवसरों दोनों का सामना करना पड़ रहा है। किसान एक कुशल उत्पादक हैं परन्तु उसे अक्सर उच्च लेन–देन लागत का व्यय उठाना पड़ता हैं। उपयुक्त संस्थागत तंत्र के माध्यम से इन लागतों को कम करने के लिए ठोस प्रयास नहीं किए गए हैं। कृषि में उत्पादन वृद्धि करने के लिए ऋण एक महत्वपूर्ण प्रभावी आदान है। संस्थागत ऋण तक पहुंच होने से किसान कृषि आदानों की नकद खरीद कर सकते हैं तथा उत्पादों की बिक्री करके भुगतान प्राप्त होने, जिसमें कभी–कभी विलंब हो जाता है और भुगतान की प्राप्ति रुक–रुक कर होती है, की अवधि तक समस्याओं का सामना कर सकते हैं तथा साथ ही वे उत्पादन में वृद्धि के लिए आवश्यक आदानों के लिए भी भुगतान कर सकते हैं। पिछले वर्षों के दौरान कृषि के निरपेक्ष संदर्भ में ग्राउंड लेवल क्रेडिट (जीएलसी) प्रवाह में पर्याप्त वृद्धि हुई है तथा 28 पफरवरी 2017 की स्थिति के अुनसार यह बढ़कर 959,826 करोड़ रू॰ (अनंतिम) के स्तर पर पहुंच गई है तथा कृषि ऋण खातों की कुल संख्या बढ़कर 9.74 करोड़ (अनंतिम) हो गई है। इनमें फसल ऋण खातों की संख्या 8.09 करोड़ (अनंतिम) है।

वर्तमान में भारतीय कृषि की कुछ प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार हैं– निवेश वितरण और स्थानीय कृषि षासन प्रणाली की दुर्बलता, वैश्वीकरण के प्रभाव सहित कीमतें और व्यापार नीतियां, बदलते मौसम का कृषि के क्षेत्र में बढ़ता ख़तरा, छोटी जोत में गिरावट तथा खंडित भूमि जोत, बढ़ते विपणन अक्षमताओं एवं बढ़ती कृषि अपशिष्ट, गैर कृषि क्षेत्र में सीमित रोज़गार के अवसर इत्यादि। इसके अलावा, भारतीय

कृषि के समक्ष अन्य वर्तमान चुनौतियां हैं– घरेलू खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना, कृषि आय में बढ़ोतरी, गरीबी उन्मूलन और जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पादन ख़तरों को कम करना, समग्र प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण सुरक्षा सुनिष्चित करना। लवणता के माध्यम से ज़मीन में गिरावट, जल जमाव के दुश्प्रभाव, ईंधन की कीमतें, खाद्य कीमतें, वित्तीय संकट, तत्काल नीतिगत हस्तक्षेप की ज़रूरत एवं अन्य कई प्रमुख विकास संबंधी चुनौतियां हैं। उच्च आर्थिक वृद्धि और बढ़ती उपभोक्ता आय के परिणाम स्वरूप नये अवसर दोनों घरेलू और वैश्विक बाज़ारों में कृशि वस्तुओं की मांग में वृद्धि कर रहे हैं। चावल, गेहूं और मक्का के अलावा कपास, सोया, मछली, मांस, अंड़ा इत्यादि के लिए अंतर्राश्ट्रीय मांग भी बढ़ रही है। बाज़ार संचालित प्रौद्योगिकियों के विकास और वितरण, अनुबंध खेती, कृशि उत्पादों के प्रसंस्करण, संगठित खुदरा बिक्री के विकास और निर्यात के लिए बाज़ारों की खोज में कॉरपोरेट सेक्टर का प्रवेश भारतीय कृषि को एक नया आयाम प्रदान कर रहा है। इनमें से कुछ उत्साहजनक विकास मूल्य श्रृंखला और खेत से थाली की ओर घटित हो रहे हैं। अब केवल इस बात की आवश्यकता है, कि बाज़ार में पूंजीनिवेश और नए अवसरों से उत्पन्न होने वाले लाभ को अभिनव कृषि के द्वारा साझा करने में कृषक समुदाय, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों को भी शामिल किया जाए।

खेती अब एक घाटे का सौदा बन गई है तथा बहुत कम लोग इसमें रुचि ले रहे हैं। साथ ही मीडिया, सरकार और शासन सभी इस मामले में चुप हैं। जिस अनुपात में खेती की लागत बढ़ी है उस अनुपात में उत्पादन का मूल्य नहीं बढ़ा है। अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के भावों की तुलना में कृषि उपज के मूल्य में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई है। खेती पुराने तरीके से की जा रही है, मिट्टी का उपजाऊपन नष्ट हो गया है, फसल चक्र को नहीं अपनाया जा रहा है, बिना मिट्टी की जांच के भारी मात्रा में रासायनिक खाद डाली जा रही है, कृशि विज्ञान केंद्र अपना उद्देश्य पूर्ण करने में असफल रहे हैं। कृषि शिक्षा और कृषि अनुसंधान को भी उपेक्षा का सामना करना पड़ा है। विश्वविद्यालयों और अन्य क्षेत्रों में हुए अनुसंधान को खेतों तक पहुंचाना एक बहुत बड़ी समस्या है। कृषि और पशुपालन का संबंध खत्म हो रहा है, कृत्रिम खाद की लागत बढ़ रही है, जल प्रबंधन की कमी है साथ ही कृषि में नवाचार करने की किसान की इच्छाषक्ति भी समाप्त हो गई है। कृशि मंडियां अपना असली उद्देश्य पूर्ण करने में असफल रही हैं। फसल की ग्रेडिंग नहीं होती, 18वीं सदी के तरीके से माल बिकता है। बाजार और किसान के बीच बहुत अधिक दूरी है तथा किसान और उपभोक्ता के बीच मूल्य में बहुत अधिक अंतर है। फसल बीमा असल में ठगी का एक तरीका है जिसे अवैज्ञानिक और व्यवहारिक तरीके से लागू किया गया है। इस प्रकार आज किसान को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कृषि क्षेत्र में नवीन अवसर और सुधार–

किसानों की आय 2022 तक दोगुनी करने के लिए गठित अंतर–मंत्रिस्तरीय पैनल, बाजार सुधारों को बड़े पैमाने पर लागू करने और कृषि उप–क्षेत्रों जैसे पशुपालन, मुर्गी पालन और मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित करने पर विचार करने की सलाह दे रहा है। इस उच्च कृषि विकास के उद्देश्य की प्राप्ति स्थिरता और पर्यावरण संबंधी चिंताओं से समझौता किए बिना की जानी चाहिए। इसके लिए वस्तु विशेष विकास से प्रणाली विशेष विकास के दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है। विकास के लिए कृषि अनुसंधान में उन्नत तकनीकों के विकास और प्रसार, विकेन्द्रीकृत नियोजन और पयार्वरण क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। कृषि आय और ग्रामीण आजीविका विकल्पों में पशुधन क्षेत्र का महत्व, जो सार्वजनिक निवेष के मामले में अब तक उपेक्षित रहे हैं, उपयुक्त नीतिगत विकल्पों के माध्यम से उच्च प्राथमिकता प्राप्त होना चाहिए। उपज के अंतर को पूरा, गैर खाद्य फसलों और गतिविधियों के लिए लक्षित,

सिंचाई और ढांचागत विकास; विशेष रूप से भंडारण, संचार, सड़क, परिवहन और बाज़ार पर विशेष ध्यान देने के साथ कृषि में सार्वजनिक निवेश के लिए प्राथमिकताओं के युक्तिकरण पर तत्काल ध्यान देना आवश्यक है। सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा भूमि, जल, जैव विविधता एवं संसाधनों का संरक्षण है, जो टिकाऊ कृषि के लिए पारिस्थितिकीय पर निर्भर है। शहरीकरण उपलब्ध भूमि और जल संसाधनों पर जबरदस्त दबाव डाल रही है। मुख्य कृषि योग्य भूमि गैर कृषि उपयोग के लिए परिवर्तित हो रही थी जिसे उपयुक्त भूमि उपयोग नीति के माध्यम से रोकने की ज़रूरत है। आम सम्पत्ति संसाधनों को अच्छी तरह से संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है। छोटे से प्रक्षेत्र प्रबंधन संबंधित सभी उप क्षेत्रों अर्थात् फसलों, पशुपालन और मत्स्य पालन में एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी विकास आवश्यक है। इस प्रक्रिया को 'छोटे किसानों द्वारा किए गए उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन की शक्ति प्रदान करने' के प्रोत्साहन की ज़रूरत है।

अभिनव कृषि के विविध आयाम (नवाचार)–

अपने 2016 के बजट भाषण में वित्त मंत्री अरुण जेटली ने 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का वादा किया था। उन्होंने कहा था कि हम अपने किसानों के दश्ष की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ बनने के लिए आभारी हैं। हमें खाद्य सुरक्षा से परे सोचने की जरूरत है और हमारे किसानों को आय सुरक्षा की भावना देनी होगी। इसलिए, खेती और गैर–कृषि क्षेत्रों में सरकार 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लिए अपने हस्तक्षेप को दोबारा तैयार करेगी। अभिनव कृषि के तहत खेती के उत्पादन को कई गुना बढ़ाना होता है क्योंकि उत्पादन को बढ़ाकर ही कृषक परिवारों की आमदनी बढ़ाई जा सकती है। यहीं से असली आर्थिक विकास शुरू होता है। अभी तो विकास के नाम पर उधार के पैसे से नागरिकों के लिए सुविधाएं जुटाने को ही विकास का नाम देकर, गाड़ी को घोड़े के आगे रख दिया गया है परंतु असल विकास यात्रा रुकी हुई है। अभिनव कृषि में कृषि क्षेत्र से संबंधित कई मुख्य बातों पर जोर दिया जाएगा। कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए हमारे समस्त सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, औद्योगिक तथा प्रशासनिक क्रियाकलाप निर्धारित किए जाएंगे तथा उसी के अनुरूप इनका ढांचा तय किया जाएगा। खेती को लाभकारी बनाने हेतु सबसे पहले खेती की लागत को कम करना होगा। साथ ही उपज के अच्छे भाव दिलवाकर खेती को जोखिम से मुक्त करना होगा। इसके लिए शासन का सहयोग पहली प्राथमिकता होगा। हमें भी अपने किसानो के साथ उसी तरह खड़े होना होगा जिस तरह से विश्व के सभी विकसित देश अपने किसानो के साथ खड़े रहते हैं। खेती में उत्पादन को तेज गति से बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों और विज्ञान को खेतों के धरातल में उतारना होगा एक खेत एक इकाई फैक्टरी के रूप में कार्य करेगा। अभिनव कृषि में उत्पादन को स्थानीय, राश्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय बाजारों के अनुसार निर्धारित करना होगा। योजना इस तरह से बनानी होगी कि न हीं तो उत्पाद की मांग बाजार में कम हो और न ही उसकी कम कीमत मिले। इसके साथ ही खेती को पशुपालन और अन्य सहायक व्यवसाय से सीधा जोड़ दिया जाएगा। क्योंकि हमारे यहां पशुधन पर्याप्त मात्रा में है तथा प्रकृति भी मेहरबान है इसलिए पशुधन प्रकृति और खेती के स्वभाविक चक्र को पुनः जोड़ना होगा तभी खेती लाभकारी होगी।

सामूहिक भागीदारी एवं समन्वित प्रयास से ही अभिनव कृषि को वास्तविकता के धरातल पर उतारा जाएगा। नीति और योजना निर्माण से लेकर समाज, कृषक, बाजार, प्रशासन तथा निजी क्षेत्र सभी का सहयोग अभिनव कृषि में अपेक्षित होगा। गंभीर मंत्रणा और चर्चा के बाद कृषि से संबंधित नीति बनाई जाएगी जिसमें खेती पशुपालन और ग्रामीण विकास को शामिल किया जाएगा तथा उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। प्रकृति के अनुसार खेती उत्पादन का प्रथम लक्ष्य निर्धारित करके उसे समयबद्ध रूप से प्राप्त किया जाएगा। कृषि के लिए सभी संबंधित विभागों का यथासंभव

सहयोग लिया जाएगा। समाज को जागरूक करके मानसिक रूप से तैयार किया जाएगा ताकि वह खेती बाड़ी में रुचि ले सके। इसके लिए सभी संभव संगठनों से मदद ली जाएगी। फिजूलखर्ची पर रोक लगाकर जो पैसा बचेगा उससे खेती और पशुपालन का विकास किया जाएगा। अर्थात समाज को परिवर्तन और विकास के लिए तैयार किया जाएगा। बाजार और खेती को आपस में जोड़कर आवश्यकतानुसार बदला जा सकेगा। समाज को अपने खानपान में उन खाद्य वस्तुओं का समावेश करना होगा जो स्थानीय खेतों में पैदा होती हैं साथ ही स्थानीय दूध और अन्य उत्पादों के बाजार विकसित किए जाएंगे तथा कृषि को आत्मनिर्भर बनाने हेतु उद्योग, व्यापार और विज्ञान से सीधा जोड़ा जाएगा। कृषि विकास के एकीकृत केंद्र विकसित किए जाएंगे। कृशि विज्ञान केंद्रों की तर्ज पर बनने वाले पूर्णतया वैज्ञानिक आधार वाले केंद्र प्रत्येक गांव में होंगे। इनके पास पर्याप्त संसाधन और शक्तियां भी होंगी। बीजों का चयन स्थानी किस्मों से करने में संभागीय कृषि कॉलेज और विश्वविद्यालय तकनीकी मदद करेंगे, तभी जय किसान जय विज्ञान होगा। सहकारिता विभाग जैविक उपज को उचित मूल्य पर खरीदेंगे और बीमा सही तरीके से उपलब्ध कराएंगे। आधुनिक सुविधाओं युक्त इन कोन्द्रों पर मिट्टी और बीज की जांच होगी, फसल के रोगों को जांचने का काम होगा तथा तकनीकी सहायता दी जाएगी। इन केंद्रों में गांव के सभी खेतों की संपूर्ण जानकारी रखी जाएगी जैसे खेत का नाप, पिछले सालों की उपज का रिकॉर्ड, मिट्टी की जांच रिपोर्ट, पेड़ों की जानकारी, जल संसाधन की स्थिति आदि। दवा और खाद की खरीद भी इन्हीं केंद्रों के मार्फत होगी। फसल बीमा और प्रशासनिक खर्च में यह केंद्र स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होंगे। इन्हें सपष्ट लक्ष्य दिया जाएगा तथा पारदर्शी रूप से कार्य करते इन केन्दों की समस्त गतिविधियों को मोबाइल पर भी देखा जा सकेगा। केवल और केवल जैविक खेती होगी, कृत्रिम खाद, फर्टिलाइजर और रासायनिक कीटनाशकों की जहरीली खेती को विदाई देनी होगी। खेती का सीजन शुरू होने से पहले मिट्टी की जांच करके रिपोर्ट कार्ड में उसकी एंट्री की जाएगी जिसके आधार पर उपयुक्त फसल का चयन करके क्षेत्रफल के हिसाब से बीज उपलब्ध करवा दिया जाएगा तथा खेत के कार्ड में उसकी एंट्री होगी। फसल की बुवाई के बाद जैविक खाद और जैविक कीटनाशक भी इसी केंद्र से मिलेंगे।

कृषिगत आदतों की समुचित व्यवस्था को बाद ही हर खेती की शुरूआत होती है। मिट्टी, मौसम, पानी और देखभाल के अन्य तत्वों के साथ साथ फसल के उत्पादन की मात्रा और गुणवत्ता को प्रभावित करने में बीज का सर्वाधिक योगदान होता है। अच्छे, उन्नत किस्म के, स्थानीय बीजों का उपयोग, खेत की मिट्टी, पानी और जलवायु के अनुकूल किया जाएगा। बीजों के वितरण की समुचित व्यवस्था के तहत बीजों से संबंधित नीति बनाकर संभागों के बीज उत्पादन और वितरण केन्द्रों को सीधा कृषि विकास केंद्रों से जोड़ दिया जाएगा। साथ ही समाज और बाजार को भी इस व्यवस्था से जोड़ दिया जाएगा। प्रत्येक उपखंड के कुछ गांवों को बीज उत्पादन के लिए चयनित किया जाएगा तथा कृषि विश्वविद्यालय से पर्याप्त तकनीकी सहयोग लिया जाएगा। इस प्रकार अभिनव कृषि में किताब विज्ञान और किसान का संगम होगा। कृषि विज्ञान का जो तरीका खेती, जल संरक्षण, विपणन और प्रसंस्करण में अपनाया जाता है उससे उत्पादकता कई गुना बढ़ जाती है। किसान को समाज के महंगे रीति–रिवाजों में अपनी कमाई डूबोने से बचाकर कृषि षिक्षा दी जाएगी। व्यापारी, उद्यमी, कृषि वैज्ञानिक और किसान के आपसी सहयोग से कृषि और पशुपालन की शिक्षा को आकर्षक बनाया जाएगा। किसान अपनी उत्पादकता को कई गुना बढ़ाने हेतु मिश्रित कृषि को अपनाएंगे। खेती के साथ पशुपालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, बागवानी जैसी अन्य सहायक क्रियाओं को जोड़कर उत्पादकता को कई गुना बढ़ा सकता है। 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने से संबंधित समिति के सदस्यों ने भी खेती के सहायक क्रिया कलापों को बढ़ाने पर

जोर दिया है। किसानों के आपसी सहयोग और विश्वास से पशुपालन को बढ़ावा दिया जाएगा तथा चारे की समस्या का समुचित निदान किया जाएगा। भेड़ और बकरी पालन तथा उनके उत्पादों से संबंधित कुटीर उद्योगों को महत्व देना होगा, प्रकृति के अनुकूल देसी नस्लों का संरक्षण और संवर्धन करके ही किसानों की आय को तार्किक रूप से बढ़ाना होगा ताकि किसी भी कृषक को आत्महत्या जैसा कदम नहीं उठाना पड़े।

निष्कर्ष–

अभिनव कृषि में, छोटे किसानों द्वारा किए गए उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन की शक्ति प्रदान करने' की प्रकिया को सक्रिय करने तथा प्रोत्साहित करने के लिए संस्थागत तंत्र, उच्च गुणवत्ता के बीज की उपलब्धता बढ़ाने के लिए एक विकेन्द्रीकृत उत्पादन, किसानों को उन्नत प्रौद्योगिकी और संबंधित सेवाओं के वितरण, और बाज़ार पहुंच में सुधार करने के लिए उत्पादन का एकत्रीकरण जो प्रक्षेत्र से थाली के दृष्टिकोण में हो, प्रसंस्करण, विपणन इत्यादि का लक्ष्य सम्मिलित होना चाहिए। कृषि खेती में युवाओं को आकर्षित करने के लिए कृषि को एक पेशेवर, पुरस्कृत और बौद्धिक रूप से संतोषजनक व्यवसाय बनाया जाना चाहिए। कृषि विकास के अभिविन्यास, प्रक्षेत्र आय को ऊपर उठाने के लिए उत्पादन में वृद्धि से बदलाव करना चाहिए। ग्रामीण और शहरी असमानता को दूर करने और ग्रामीण आजीविका विकल्पों में विविधता लाने के लिए, फसलों, पशु पालन, मत्स्य पालन, बागवानी गतिविधियों की जरूरत है। किसानों को बाज़ार से जोड़ना उच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। समय के साथ प्रौद्योगिकी और नीतियों की परस्पर–निर्भरता बढ़ाने तथा कृषि विकास के इन दो प्रमुख चालकों के बीच एक तालमेल विकसित करना आवश्यक है। इसके अलावा कृषि से संबंधित विभिन्न सरकारी विभागों के कार्यक्रमों का अधिक से अधिक एकीकरण होना चाहिए। इनसे न केवल विभिन्न नीतियों की पहल पर सामंजस्य बनाए रखने में बल्कि प्रभावी ढंग से और समय पर कार्यक्रमों को लागू करने में मदद मिलेगी। कृषि नीतियों और सुरक्षा तंत्र कार्यक्रमों के बीच अभिसरण का एहसास होना चाहिए। विशेष खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों को, पोशण, स्वास्थ्य, महिलाओं और बच्चों की देखभाल से संबन्धित गैर खाद्य कार्यक्रमों से जोड़ना चाहिए। योजनाओं को एक नया दिशा निर्देश किसानों की बेहतरी के लिए दिया जाए। भविष्य में नीतिगत पहलों, गरीब किसानों में कौशल और ज्ञान का विकास, उनकी आय का स्तर बढ़ाने और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था में किसानों (खेतिहर मज़दूरों) की भूमिका को बढ़ाने के लिए उन्हें सशक्त बनाना होगा। इन तमाम नई पहलों के द्वारा ही किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या की घटनाओं पर रोक लगाई जा सकती है।

संदर्भ–

1. पालागुम्मी सांईनाथ, एवरीबडी लव्ज ए ड्रौट (तीसरी फसल), पेंग्विन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1996
2. एवरी थर्टी मिनटस्– फार्मर स्यूसाइड, ह्यूमन राइटस् एंड द एगरेरियान क्राइसिस इन इंडिया,
3. तीन वर्षों का विजन एवं रणनीतिक दस्तावेज, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली, अगस्त 2017
4. किसानों की आय दोगुनी करने पर विशेषज्ञ समूह की रिपोर्ट, लाइव मिन्ट, 2017
5. बजट भाषण में वित्त मंत्री अरुण जेटली, फरवरी, 2017
6. नवीनतम रिपोर्ट, राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो, नई दिल्ली, 2017

7. कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जुलाई 2017
8. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) सर्वेक्षण रिपोर्ट, 2013
9. चौधरी, डॉ. अशोक, असली लोकतंत्र, असली विकास, इन्फोलिम्नर पब्लिशर, जयपुर, 2017
10. योजना, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, मार्च, 2017